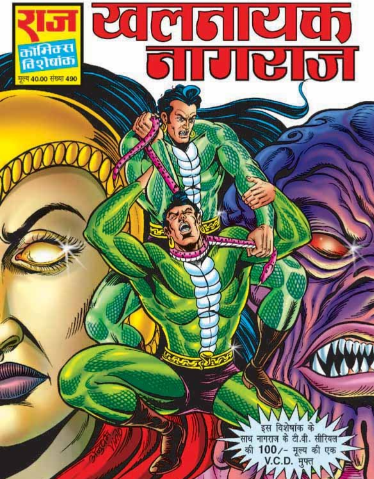

राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 490
खलनायक
नागराज
इस विशेषांक के
साथ नागराज के टी.वी. सीरियल
की 100/- मूल्य की एक
V.C.D. मुफ्त

हर इंसान के कई रूप होते हैं। चंचल, गंभीर, खुश, उदास, शांत, क्रुद्ध, ये सारी भावनाएं इंसान को नए-नए रूप देती रहती हैं। मुश्किल तब होती है जब इंसान के अंदर बुरी भावनाएं अपना सिर उठाने लगती हैं। जब तक ये भावनाएं शरीर के अंदर रहती हैं तब तक इनको दबाना आसान होता है। लेकिन इंसान तब क्या करे जब ये भावनाएं शरीर से बाहर आकर रूप धारण कर लें? समस्या तब और गंभीर हो जाती है जब वह इंसान हो नागराज और उसकी बुरी भावनाएं रूपधर कर बन जाएं...

खलनायक नागराज

संजय गुप्ता की पेशकश

कथाः	चित्रः	इंकिंगः	सुलेख एवं रंगः	सम्पादकः
जॉली सिन्हा	अनुपम सिन्हा	विनोदकुमार	सुनील पाण्डेय	मनीष गुप्ता

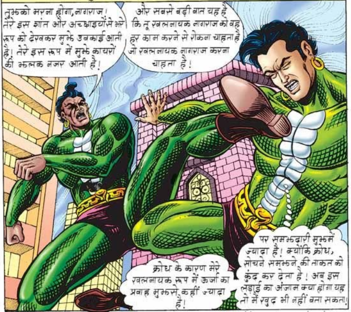

©RAJA POCKET BOOKS
visit us at: www.rajcomics.com

महानगर का कम्यूनिटी हॉल-
तड़
तड़
तड़
कमाल की मानसिक शक्ति है ब्रेनगन में राज! ये... हाथ की सफाई तो नहीं हो सकती न?
नहीं भारती! ये शक्ति असली है! इस शक्ति को 'टेलीकाइनेसिस' कहते हैं! मानसिक शक्तियों द्वारा वस्तुओं को चला सकने की शक्ति! ये कला भगवान की देन होती है! सीखी नहीं जा सकती!
ये इस शो की सिर्फ मामूली सी शुरुआत थी दोस्तों! मानसिक शक्ति का असली करिश्मा तो ब्रेनगन आपको अब दिखाएगा!
ये देखिए!
पानी से भरा हुआ बुलेटप्रूफ कांच का यह जार!

आप देख सकते हैं कि ये कांच बुलेटप्रूफ है!
धांय
टिंग
अब ध्यान से देखिए! मेरी मानसिक शक्ति इस पानी का क्या करेगी?
एमेजिंग! ब्रेनगन दूर से सिर्फ देखकर पानी को भंवर की तरह घुमा रहा है!
सिर्फ घुमा नहीं रहा! इतनी तेजी से घुमा रहा है कि पानी का तापमान...
...बढ़ रहा है! पानी उबल रहा है!
भाप बन रही है!
और भाप का प्रेशर इतना बढ़ रहा है...
...कि बुलेटप्रूफ जार फट पड़ा है!

धन्यवाद, धन्यवाद!
ता लियां... ता लियां...
लेकिन इन तालियों को अभी बचाकर रखिए!
क्योंकि इस मेंटल पावर के शो का क्लाइमेक्स आइटम अभी बाकी है!
ऊपर देखिए!
दोस्तो! अब हुक कार को छोड़ेगा! और कार ठीक मेरे ऊपर गिरेगी!
और मुझको कुछ बचाएगी तो सिर्फ मेरी मानसिक शक्ति!
अंजाम क्या होगा यह मैं खुद नहीं जानता, क्योंकि मैं यह खेल पहली बार दिखा रहा हूं!
ओ गॉड! ऊपर हुक से एक कार लटकी हुई है! ब्रेनगन के सिर के ठीक ऊपर!
पर क्यों? इस कार से क्या करना चाहता है ब्रेनगन?
देखते रहो! तमाशा बाकई जोरदार होगा!
हुक को खोल दो!

कार तेजी से नीचे गिरी-
और साथ ही साथ दर्शकों की सांसें भी थम गईं-
कुछ ही पलों में जिन्दगी और मौत में से एक को जीत जाना था-
और इस वक्त पलड़ा मौत का भारी था-
ब्रेनगन की भंवें सिकुड़ती जा रही थीं! उसकी मानसिक शक्ति को बढ़ाने की कोशिश साफ नजर आ रही थी-
लेकिन कार का गिरना अभी भी जारी था-
ब्रेनगन का दिमाग, अब अपने शरीर के बारे तक में भूल चुका था-
अब ब्रेनगन को उसकी जीत या हार का एहसास सिर्फ एक ही चीज दिला सकती थी-
दर्शकों की तालियां-
हॉल, तालियों से गूंज उठा था-
क्योंकि कार ब्रेनगन के शरीर से कुछ इंच ऊपर हवा में थम गई थी-

Amaan

RCJ

इन तालियों ने अंजाने में एक खतरनाक स्थिति पैदा कर दी थी-
जिसको नागराज की आंखों ने तुरन्त भांप लिया था-
तालियों की आवाज ने ब्रेनगन का ध्यान बंटा दिया है। कार को हवा में थामें रखने वाली उसकी मानसिक शक्ति टूट रही है!
कार इसको कुचल डालेगी! मुझे इसको बचाना होगा!
पर कैसे? इतनी भीड़भाड़ वाली जगह पर मैं इतनी जल्दी नागराज कैसे बन सकता हूं!
लेकिन एक दूसरा तरीका है!
ब्रेनगन को खतरे का आभास थोड़ी देर से हुआ था-
ओह! ये मुझसे क्या हो गया? अब मैं कार को हवा में थामे नहीं रख सकता! ओऽऽऽह!
पर... पर ये क्या? मेरा ध्यान टूट रहा है! लेकिन... लेकिन कार मुझ पर गिर क्यों नहीं रही है?
DANGER
जवाब यहां पर था-
कार इस पर इसलिए नहीं गिर रही है क्योंकि मैं अपनी फुंकार से कार और इसके शरीर के बीच में हवा का एक गद्दा बना रहा हूं! बस ध्यान मुझको इस बात का रखना है कि इस फुंकार में विष न मिश्रित होने पाए!
आखिरकार हवा के गद्दे ने कार को ब्रेनगन के शरीर से दूर उछाल दिया-
आऽऽऽह! बच गया मैं...
...और मुझको बचाने वाला शख्स वह है! यह कौन है और इसने मुझे कैसे बचाया यह तो मुझे पता नहीं! पर मैं इसका शुक्रिया जरूर अदा करूंगा!

ऑटोग्राफ प्लीज!
एक मुझे भी!
अरे! वह फरिश्ता जा रहा है!
हटो! हटो, रास्ता दो मुझे! अभी मैं सबको ऑटोग्राफ दूंगा!
एक मिनट! एक मिनट! जरा मेरी बात सुनिए!
Cocal
ब्रेनगन तुमको बुला रहा है राज! पर क्यों?
पता नहीं, भारती!
आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!
किस बात के लिए?
मेरी जान बचाने के लिए!
आपकी जान? आपकी जान मैंने कब बचाई?
छुपाने की कोई जरूरत नहीं है! आपने मुझे कैसे बचाया, यह तो मैं नहीं जानता! पर इतना मुझको जरूर आभास हो रहा है कि आपके अंदर कोई अद्भुत शक्ति है!
ये... ये आप क्या कहरहे हैं? मैं तो राज हूं! एक न्यूज चैनेल का मामूली सा कर्मचारी!
आप जो भी हो मिस्टर राज! आपने मेरी जान बचाई है! और समय आने पर मैं यह कर्ज जरूर उतारूंगा!
ये सब क्या चक्कर है राज? तुमने इसकी जान कब बचाई?
बताऊंगा भारती! फिलहाल तो यहां से खिसक लो!
इस खतरनाक आदमी के पास राज का ज्यादा देर तक रहना ठीक नहीं है!

RCJ

लेकिन राज उर्फ नागराज की किस्मत में महानगर के उस ऑडिटोरियम से जल्दी जाना नहीं लिखा था-
एक ऑटोग्राफ मुझे भी दीजिए न! मैं तो दीवानी हूं आपकी! आज तक मैंने आपका एक भी शो नहीं छोड़ा है!
ऐसे प्रशंसक तो किस्मत वालों को मिलते हैं! लाइए अपनी ऑटोग्राफ बुक!
ये लीजिए बुक! और ये लीजिए पेन! इसी पेन से ऑटोग्राफ दीजिएगा मुझे!
लाइए!
अरे! ये... ये कैसा पेन है? ये मेरे हाथ से चिपक गया है! और इसमें से तेज वायब्रेशन निकल रहे हैं... जो... मेरे... पूरे शरीर को... सुन्न करते जा रहे हैं!
मैं...मैं...
...बेहोश हो रहा हूं ssss
अब ले चलो इसे!
इसको खड़ा करके सहारा देकर ले जाना! ताकि कोई देखे तो यही समझे कि ये हमारे साथ मर्जी से जा रहा है!
अब चलो!

Amaan

RCJ

बाहर-
अब क्या हो गया, भारती ? चलती क्यों नहीं ?
तुम्हारे चलो-चलो के चक्कर में मैं ब्रेनगन से भारती चैनेल पर इसके शो के बारे में बात करना तो भूल ही गई!
चलो! उससे तुमको ही शो की बात करनी है!
वैसे भी, उसको तुम्हारा न जाने किस बात का एहसान उतारना है!
चले कहां? वह तो इधर ही आ रहा है! लो अभी बात कर लेता हूं! मिस्टर ब्रेनगन!
मैडम, ये तो इधर ही आ रहे हैं!
क्या करना है इनका ?
मैं पहचानती हूं इनको! ये न्यूज चैनेल वाले हैं! इनकी नजरें गिद्ध से भी तेज होती हैं!
इनको पास मत आने देना!
हटो, हटो! पीछे हटो! मिस्टर ब्रेनगन अभी किसी से बात नहीं कर सकते!
अरे! ब्रेनगन तो बेहोश है! कुछ गड़बड़ है!
माफ करना मैडम! पर अब हम तुमको जिन्दा नहीं जाने दे सकते!
घ... घबराना मत मैडम!
मैं अभी मदद लेकर आता हूं!

और वह मदद है...
...नागराज!
महानगर में कोई भी अपराध करने में यही तो गड़बड़ी है!
पत्ता भी खड़काओ तो ये शैतान आकर हड्डियां कड़कड़ा देता है! इसको रोको, मेल्टाल! तब तक हम ब्रेनगन को लेकर यहां से निकलते हैं!
जो हुक्म मैडम! अब नागराज आपके पीछे नहीं भागेगा, बल्कि इसके पीछे भागेगी इसकी मौत!

और इसको उस मौत के हवाले करेगा, लिक्विड मेटल का बना शैतान मेल्टाल !

Amaan

RCJ

ओफ्फ! इस लिक्विड मेटल के शरीर पर मेरे वारों का असर नहीं हो रहा है! मेरे वार इसके शरीर के अंदर घुसते जा रहे हैं!
और उधर वे दोनों ब्रेनगन को लेकर भाग रहे हैं!
मुझे इससे लड़ने के बजाय ब्रेनगन को बचाने जाना चाहिए!
नागराज ब्रेनगन की तरफ बढ़ा तो जरूर लेकिन वहां तक पहुंच नहीं पाया-
अपनी मौत से बचकर भागना चाहता है नागराज? लगता है तूने वह कहावत सुनी नहीं कि मौत से बच-कर कोई नहीं भाग सकता!
लिक्विड मेटल की दर्जनों गोलियां नागराज के शरीर को छेदती निकल गईं-

गोलियों के धक्के ने नागराज को जमीन पर ला पटका-
और अगले ही पल उसका शरीर पतले-पतले धातु के तारों से जकड़ गया-
आऽऽऽ ह! ये तारें तो तेज ब्लेडों की तरह मेरे शरीर को काट रही हैं!
और ब्रेनगन को ले जा रही कार मुझसे दूर होती जा रही है!
मुझको इच्छाधारी कणों में बदलना होगा!
मेल्टाल को जैसे नागराज की इसी हरकत का इंतजार था-
इतनी जल्दी भी क्या है नागराज? मरना है तो तड़प-तड़पकर मरो!
कटाक
ओऽऽऽ ह! इससे पहले कि मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर बिखर पाता, इसने मुझको धातु के खोल में ढकना शुरू कर दिया है!
और अब धातु का यह खोल सिकुड़ रहा है! साथ ही साथ मेरी हड्डियां भी कड़कनी शुरू हो गई हैं! आऽऽऽ ह!
नागराज को अब ब्रेनगन के बजाय अपनी जान बचाने के बारे में सोचना पड़ रहा था-

Amaan

RCJ

हा हा हा! अब कुछ भी कर ले नागराज, लेकिन मेरा मेटल कवर तुझको दबा-दबाकर मार डालेगा! बड़ी दर्दनाक मौत होगी तेरी!
दर्दनाक मौत नागराज की नहीं, तेरी होगी मेल्टाल! नागराज के ऊपर चढ़े तेरे सिकुड़ते कवर को रोकेगी मेरी तिलिस्मी आग! अब ये कवर नहीं सिकुड़ेगा! क्योंकि धातु, गर्मी पाकर सिकुड़ती नहीं, बढ़ती है!
लेकिन तू धातु का बना है! और मैंने तुझ जैसी धातु से बनी एक ही चीज देखी है! मूर्तियां! अब तू मूर्ति बनकर जी सकता है तो जी!
क्योंकि अब मेरा तिलिस्मी वार तेरे लिक्विड मेटल के शरीर को ठोस बना देगा!
कड़ी धातु की मूर्ति जैसा ठोस!
मुझे मूर्ति बनाएगी तो तेरा बदन भी कड़ा हो जाएगा! मुर्दे जैसा कड़ा! क्योंकि तब तेरी गर्दन पर लिपटा मेरा लिक्विड मेटल का शिकंजा भी कड़ा होकर तेरी गर्दन दबा डालेगा!
आक! दम घुट रहा है! लेकिन... मैं हार नहीं मानूंगी!
भारती द्वारा पैदा किए गए इस व्यवधान ने नागराज को सोचने का मौका दे दिया था-
मैंने भारती की बात सुनी है! तिलिस्मी आग इस खोल का सिकुड़ना रोक तो नहीं पाई है लेकिन इसके सिकुड़ने की गति धीमी जरूर हो गई है!
अब मुझे थोड़ा समय मिल गया है! पर मैं समय लेकर करूंगा क्या? मैं तो बाहर देख भी नहीं सकता! या...देख सकता हूं! अपने जासूस सर्पों की आंखों से! उनसे मानसिक संपर्क बनाकर!

Amaan

RCJ

अपने सबसे पास मौजूद जासूस सर्प से संपर्क बनाते ही नागराज को उनकी आंखों से अपने आस-पास का दृश्य नजर आने लगा-
ओह! मुझको वह चीज नजर तो आ रही है जो मुझको बचा सकती है! लेकिन इस योजना में दोहरा खतरा है!
एक तो उस योजना को पूरा करने के लिए मुझे तिलिस्मी आग के घेरे से बाहर निकलना पड़ेगा, और तब इस खोल के सिकुड़ने की गति फिर तेज हो जाएगी!
और दूसरा यह कि इस योजना में मेरी जान भी जा सकती है! क्योंकि मुझ पर होने वाला वार काफी तीव्र होगा!
पर योजना तो पूरी करनी ही होगी! क्योंकि बचूंगा तो मैं ऐसे भी नहीं!
जासूस सर्पों! मुझे खींचकर मेरी बताई जगह पर ले चलो!
जासूस सर्पों ने नागराज को खींचना शुरू कर दिया-
भारती, नागराज को बचाने के लिए अपनी जान लड़ा रही थी-
लेकिन अब उसकी जान यह लड़ाई हार रही थी-
आऽऽऽह! बेहोशी छा रही है! इसका शरीर कड़ा होने के साथ-साथ शिकंजा भी कड़ा होकर मेरी गर्दन पर कसता जा रहा है! अंधेरा... छा... रहा है!

अब मददगार को ही मदद की जरूरत पड़ गई थी-
लेकिन नागराज की कोशिशें जारी थीं-
उसके सर्प तेजी से भारी भरकम क्रेन की एक तरफ की मिट्टी को हटाकर क्रेन को तिरछा करते जा रहे थे-
लेकिन अब नागराज के लिए भी खतरा बढ़ता जा रहा था-
आऽऽऽह! अब मैं इस खोल का दबाव नहीं सह सकता! इस दबाव से हड्डियां तो कड़कड़ा ही रही हैं, साथ ही साथ मेरे शरीर का रक्त संचार भी अवरुद्ध हो रहा है!
जल्दी करो, मेरे सर्पों! जल्दी करो!
धड़ाक
काम हो चुका था-
क्रेन तेजी से उस स्थान के ऊपर आ गिरी थी जहां पर जासूस सर्प, धातुई खोल में कैद नागराज को खींच लाए थे-
उस वार ने खोल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए! साथ ही साथ नागराज की चटनी बन जानी भी तय थी-
ओह! बहुत फुर्ती से काम करना पड़ा! खोल के अंदर मैं इच्छाधारी कणों में नहीं बदल पा रहा था! इसीलिए जैसे ही क्रेन ने खोल का स्पर्श किया मैं इच्छाधारी कणों में बदल गया और खोल से बाहर आ गया!

कहानी 19 पेज से जारी

Amaan

RCJ

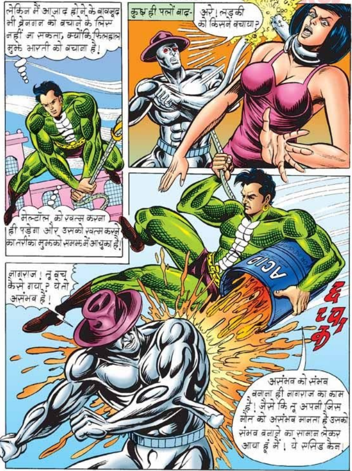
लेकिन मैं आजाद होने के बावजूद भी ब्रेनगन को बचाने के लिए नहीं जा सकता, क्योंकि फिलहाल मुझे भारती को बचाना है!
कुछ ही पलों बाद-
अरे! लड़की को किसने बचाया?
मेल्टॉल को खत्म करना ही पड़ेगा और उसको खत्म करने का तरीका मुझको समझ में आ चुका है!
ACID
नागराज! तू बच कैसे गया? ये तो असंभव है!
छपाक
असंभव को संभव बनाना ही नागराज का काम है! जैसे कि तू अपनी जिस मौत को असंभव मानता है उसको संभव बनाने का सामान लेकर आया हूं मैं! ये एसिड कैन!

गलत अंदाजा लगाया है तूने, नागराज! मेरा शरीर पारे जैसी तरल धातु का बना है। और इस पर तेज एसिड का भी असर नहीं होता...
... और तरल धातु का बना होने के कारण मैं कोई भी रूप धारण कर सकता हूं!
धड़ाम
और वे सारे काम कर सकता हूं जो धातु के जरिए किए जाते हैं! जैसे लोहे के हथौड़े से कील की तरह ठोंकना!
या धातु के तारों से बिजली के झटके देना!
आsss ह! यह विद्युत भी पैदा कर सकता है!
और इस विद्युत का झटका भी बहुत तेज है!

आऽऽऽह! मेरी नाग शक्तियां इस धातुई मेल्टॉल को नुकसान नहीं पहुंचा सकतीं! और इसके विद्युत झटके मुझे इच्छाधारी कणों में बदलने नहीं दे रहे हैं! अब कैसे निपटूं मैं इस पारे जैसे शरीर वाले खतरनाक प्राणी से? एक मिनट! पारे जैसा! हां, मिल गया हल इस समस्या का!
इस समस्या का हल है गर्मी! जो मेरे ध्वंसक सर्पों के धमाके पैदा करेंगे! गर्मी पाकर जैसे पारा बढ़ता है वैसे ही इसका शरीर भी बढ़ेगा!
लेकिन किसी भी चीज के बढ़ने की एक सीमा होती है!
और उस सीमा से पार जाते ही मौत का सरिया चालू हो जाता है!
ऊर्जा पाकर मेल्टॉल का तरल धातु का शरीर फूलता चला गया-

और फिर- एक धमाके के साथ मेल्टॉल के टुकड़े हवा में बिखर गए-
पता नहीं अभी भी ये मरा है या नहीं! लेकिन अगर ये मर भी गया है तो भी मुझे इसके मरने का कतई अफसोस नहीं है। क्योंकि ये जो भी था, कम से कम इंसान तो नहीं ही था!
लेकिन इसके खत्म होने से एक नुकसान भी हुआ है, नागराज! अब ये पता कैसे चलेगा कि ब्रेनगन का अपहरण किसने किया है?
और वे लोग उसको कहां ले गए हैं!
शायद वे ब्रेनगन के दुश्मन रहे हों! हमें ब्रेनगन के परिवार वालों से मिलकर यह पता करना होगा कि ब्रेनगन की किससे दुश्मनी थी!
जो करना है करो! पर ब्रेनगन को जल्दी ढूंढ़ना! उसका शो जो टी. वी. पर दिखाना है हमको!
हा हा हा! ओ. के. भारती! ब्रेनगन का पता चलते ही मैं राज के साथ उसको तुम्हारे पास भेज दूंगा!

ब्रेनगन को व्यक्तिगत दुश्मनी की वजह से नहीं, बल्कि किसी और कारण से अगवा किया गया था-
अब इसका और क्या करना है मैडम ?
इसको नशे के इंजेक्शन लगाते रहो ! ताकि ये होश में तभी आए...
...जब हम इसको होश में लाना चाहें ! अगर ये उससे पहले होश में आ गया...
...तो शायद हम सबको अपने होश गंवाने पड़ें !
अब इसको हमारी 'पर्सनेलिटि-स्पलिट' मशीन के बीच में बांध दो !
उसके बाद हम तुमको दिखाएंगे कि इंसान को वफादार कुत्ता कैसे बनाया जाता है !

मिस किलर के रचे इस षड़यंत्र को नाकामयाब करने की नागराज पूरी कोशिश कर रहा था-
लेकिन उसको सफलता मिलने की उम्मीद कम ही थी-
ब्रेनगन के घर में-
नहीं, नागराज! मेरे पति तो बहुत शरीफ आदमी हैं! एकदम जेंटिलमैन! उनका तो कोई दुश्मन होगा भी तो उनको प्यार करने लगेगा!
यानी आपको उनके किसी दुश्मन का पता नहीं है! शायद आपके घर का कोई और सदस्य इस बारे में कुछ जानता हो! कौन है आपके घर में?
मेरे अलावा तो सिर्फ... खैर!
उससे आप कुछ नहीं पूछें तो अच्छा है!
क्यों? कौन है वह?
बचिए, नागराज जी!
हेलो, पापा! अरे... सॉरी, सॉरी! मैं...मैं.. समझा कि पापा वापस आ गए हैं!
पर आप तो नागराज हैं! वाऊ! एंड सॉरी!
मोंटी! तुमसे कितनी बार कहा है कि अपने पापा का इस तरह से वेलकम करना बंद करो!
कोई बात नहीं! लेकिन तुमने इतनी भारी कुर्सी उठाकर फैंकी कैसे, मोंटी?

ऐसे! अब कहिए तो फेंककर भी दिखाऊं?
नहीं! मैं समझ गया!
ओफ़! कितनी बार कहा है कि अपनी शक्तियां ऐसे मत दिखाया करो, मोंटी! वर्ना लोग तुमको असामान्य बच्चा समझेंगे! एक अजूबा!
मैं सबको तमाशा कहां दिखाता हूं, मम्मी! ये तो नागराज अंकल थे तो दिखा दिया!
ओफ़! अपने पिता की शक्तियों के साथ-साथ थोड़ी सी उनके जैसी अक्ल भी लेकर पैदा होता तो अच्छा होता!
अक्ल तो आपसे ली है, मम्मी! तभी तो इतना समझदार हूं!
पर नागराज अंकल यहां पर क्यों आए हैं?
व्हॉट? पापा की किडनैपिंग हो गई! नो!
हां, मोंटी! अब अगर तुम्हारा शक किसी ऐसे आदमी पर हो तो हम उसके पास जाकर तुम्हारे पापा का पता लगा सकते हैं!
इतना लंबा चौड़ा नागराज अंकल कहने की जरूरत नहीं है, मोंटी! तुम मुझको सिर्फ 'नागराज' कह सकते हो!
ओ. के. नागराज! बताइए आप पापा से मिलने आए हैं या मुझसे?
तुम समझदार हो मोंटी! मेरे ख्याल से तुमको सच्चाई पता होनी चाहिए! तुम्हारे पापा का अपहरण हो गया है! और मैं ये जानने आया हूं कि ये अपहरण कौन कर सकता है!
ऐसे आदमी का तो मुझे पता नहीं है, पर पापा का पता तो मैं चुटकियों में लगा सकता हूं!
कैसे?

मैंने और पापा ने कई बार एक साथ बैठकर अपने ब्रेन्स की आपस में ट्यूनिंग की है! ये एक तरह की टेलीपैथी है। यानी मैं पापा की 'मेंटल वेव्स' पकड़ सकता हूं, और पापा मेरी! बस मुझको जरा सा ध्यान लगाना पड़ेगा...
...और मैं पापा की स्थिति का पता लगा लूंगा!
मिल गई मुझको पापा की मेंटल वेव्स!
आइए मेरे साथ, नागराज अंकल! मेरा मतलब नागराज।
जरा संभल कर मोंटी!
चिन्ता मत करो मम्मी! मेरे साथ तो नागराज है!
चिन्ता उनको करनी चाहिए, जिनके पास मैं नागराज को ले जा रहा हूं!
इस तरफ नागराज! पापा इसी तरफ हैं!
और इसी वक्त-
राजनगर की सीमा पर स्थित सैकड़ों किलोमीटर के इलाके में फैले रेगिस्तान में-
जिसकी रेतीली सतह ऊपर से तो शांत नजर आ रही थी-

लेकिन उसके नीचे बहुत कुछ हो रहा था-
हम रेत के नीचे कहां जा रहे हैं मैडम?
जरा सब्र रख, जॉज! अभी कुछ ही देर में तुझको सब पता चल जाएगा! बस, इतना जान ले कि जहां पर हम जा रहे हैं उससे ज्यादा सुरक्षा तो शायद राष्ट्रपति भवन में भी नहीं है!
और इस छोटे से कैप्सूल में हम तीन लोग ही आ सकते हैं! इसीलिए काम आसान नहीं होगा!
चिन्ता की कोई बात ही नहीं है मैडम! जब मैटलमैन हमारे साथ है तो हम पूरी आर्मी से निपट सकते हैं!
इसीलिए वहां पर हमको गुप्त रूप से इस छोटे से ड्रिलिंग कैप्सूल में जाना पड़ रहा है!
इसी वक्त- एक अत्यंत गुप्त स्थान पर-
मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आ रहा है, सर! आखिर हम अपने 'गेस्ट' को अमेरिका भेजना क्यों चाह रहे हैं?
भेजना चाह नहीं रहे हैं भास्कर! बल्कि भेजने का पूरा इंतजाम कर चुके हैं!

यह हमेशा याद रखना भास्कर कि विज्ञान की तरक्की का फायदा पूरी मानव जाति को मिलता है! किसी एक मुल्क को नहीं! हम चार साल से अपने 'गेस्ट' की टेस्टिंग कर रहे हैं, पर सफल नहीं हो पाए! उसका राज अभी भी राज ही है!
शायद अमेरिका वाले इसके राज पर से पर्दा उठाने में कामयाब हो सकें! हमको विज्ञान की तरक्की रोकने का कोई हक नहीं है!
आप शायद ठीक कह रहे हैं! लेकिन इसको भेजने की जो तैयारियां की गई हैं, उससे हमारे गेस्ट और इस गुप्त स्थान की खबर कई कानों तक पहुंच गई है! अब तक ये रहस्य हमारे अलावा और कोई नहीं जानता था! अब ये राज कई लोग जानते हैं!
और उनमें अपराधी किस्म के लोग भी शामिल हैं!
और वे यहां तक भी आ पहुंचे हैं!
हमको 'गेस्ट' को इनके हाथों में पड़ने से बचाना होगा!
हर कीमत पर! गार्ड्स! गार्ड्स!

Amaan

RCJ

सिक्योरिटी मुस्तैद थी-
कैप्सूल से उतरते ही तीनों गोलियों की बाढ़ में घिर चुके थे-
गेस्ट को यहां से बाहर ले जाना होगा!
गार्ड्स को रोको!
इनकी गोलियों को मेरी मेंटल पॉवर कुछ देर के लिए तो बंदूकों से निकलने से रोक सकती है, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं!
कुछ देर ही बहुत है, मेंटल मैन!
क्योंकि उस कुछ देर में जॉज अपना काम कर लेगा! इनकी बंदूकों के टुकड़े-टुकड़े करके!
कड़-च
ओ गॉड! इसके जबड़े तो इतने मजबूत हैं कि ये हमारी गन मेटल की बंदूकों के टुकड़े-टुकड़े कर दे रहा है!

गॉर्ड्स की पहली टुकड़ी को तो मिस किलर के गुंडों ने आसानी से काबू में कर लिया था-
लेकिन सुरक्षा के ऐसे कई घेरे थे-
ओफ़! हम जिस चीज़ को लेने आए हैं, उसको यहां से ले जाया जा चुका है! हमको उसका पता लगाना होगा!
मैं अभी उसका पता लगाता हूं!
वहां तक पहुंचना तो दूर तुम्हारा यहां से जाना ही असंभव है! आत्मसमर्पण कर दो!
मेंटलमैन ने ध्यान लगाया-
लेकिन मेरे वार पहुंच सकते हैं!
ओफ़! हम चारों तरफ से घिर चुके हैं! और इतनी दूर तो मेरे वार भी नहीं पहुंच सकते!
और निशाना साधे सैनिकों पर पूरी छत ही आ गिरी-
आऽऽऽह!
अब रास्ता साफ है!

आपको जिस चीज की तलाश है मैडम, वह इस तरफ है!
जिस शख्स को कोई चीज ढूंढ़ने के लिए नजरों की जरूरत ही न पड़े-
उससे भला किसी चीज को कैसे बचाया जा सकता है-
हे भगवान! इन्होंने सुरक्षा घेरे को भी तोड़ डाला और हमको ढूंढ़ भी निकाला! पर कैसे?
हा हा हा! मिल गया! वह जिसकी मुझको जरूरत थी!
अब इसको भी उठाकर ले चलें, मैडम?
नहीं! इसकी जरूरत नहीं है! मैं यहां पर इसको नहीं बल्कि इसके दिमाग को चुराने आई हूं! मेंटल मैन! इसके दिमाग को अनलॉक करके वह काम पूरा कर दो जो ये निकम्मे वैज्ञानिक चार साल में नहीं कर पाए!
फिर इसका दिमाग अनलॉक होते ही मैं अपने 'पर्सनेलिटी स्पलिट गैजेट' की मदद से इसकी शख्सियत का हर पहलू चुरा लूंगी!
फिर इसकी सारी भावनाएं और सारा ज्ञान मेरे कब्जे में होगा!

और उस ज्ञान की मदद से मैं बनूंगी विश्व सम्राज्ञी! अनलॉक करो इसका दिमाग, मेंटल मैन!
ढम्मा
मैडम! फर्श अपने आप टूट रहा है! जैसे... जैसे कि अंदर से कोई ऊपर की तरफ खोद रहा हो!
ओ माई गॉड! ये काम तो एक ही शख्स का हो सकता है! मेरे कबाब की पुरानी हड्डी!
ये पुरानी हड्डी कौन है मैडम?
तुम जैसे शैतानों की हड्डियां तोड़ने वाला नागराज!
ये... ये यहां पर कैसे आ गया?
ब्रेनगन का बेटा मौंटी अपने पिता की विचार तरंगों का पीछा करता हुआ मुझे यहां तक ले आया है!
थैंक गॉड कि तुम वक्त पर आ गए नागराज!
अगर ये हमारे मेहमान को ले जाने में कामयाब हो जाते तो पूरी दुनिया खतरे में घिर जाती!

कहानी 35 पेज से जारी

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: राजनगर की तबाही

Amaan

RCJ

और नागराज का रास्ता जॉज ने रोक लिया–
नागराज को जब तक रोक सकता है, रोक जॉज !

तब तक मैं खुद अपनी 'पर्सनेलिटी स्पलिट मशीन' की मदद से इस परग्रही का दिमाग अनलॉक करने की कोशिश करती हूं !

आSSS ह! मैं... मैं मेंटल मैन से मानसिक संपर्क क्यों नहीं बना पा रहा हूं! पापा से मानसिक संपर्क बनाने में मुझको सेकंड भी नहीं लगता था! ...
ऊऊऊ
... और... और अब मुझे ऐसा लग रहा है कि मेंटल मैन मेरे दिमाग में घुस रहा है। मेरे दिमाग को अपने कब्जे में लेना चाह रहा है। ओ पापा! मेरे मानसिक संकेतों को पहचानिए! मैं मौंटी हूं, मौंटी!
कोई फायदा नहीं! मेंटल मैन मुझे गुलाम बनाए बिना मानने वाला नहीं है!
मुझे इसको ऐसा करने से रोकना होगा!
आSSS ह!
जरूर यह नकाब ही पापा को मिस किलर का गुलाम बनाए हुए हैं! अब मुझको इसका नकाब उतारकर पापा को आजाद कराना होगा!
नागराज भी जॉज से निपटने की योजना बना रहा था-
यहां पर विष फुंकार का प्रयोग करना मौंटी और परग्रही के लिए खतरनाक हो सकता है!
इसके मुंह को सर्प रस्सी में बांधने की कोशिश करता हूं!
ताकि ये अपने घातक जबड़े मुझ पर न छोड़ पाए!

नागराज के सांप जॉज की तरफ चले तो जरूर-
लेकिन जॉज के जबड़ों ने उनको अपने पास फटकने तक का मौका नहीं दिया-
अपनी नाग शक्ति पर तुझे जो गुमान है उसको मेरे जबड़े चूर-चूर कर देंगे नागराज!
और तेरे गुमान के बाद तेरे बदन की बारी आएगी!
खटटच्च
ओह! इसने पहले तो छोटे छोटे जबड़ों से मेरे नागों को भींच डाला! ...
... और अब मुझ पर वार करने के लिए ये और बड़े, खतरनाक जबड़ों को उगल रहा है। जो शार्क और मगरमच्छ के जबड़ों जैसे खतरनाक हैं!
और ये मुझको टुकड़ों-टुकड़ों में काट डालने की क्षमता रखते हैं!
ओफ्! ये मुझे उलझाए हुए हैं और मिस किलर अपना काम करती जा रही है!
...... मुझे इच्छाधारी रूप धारण करना होगा!

नागराज तुरन्त इच्छाधारी रूप में बदल कर जबड़ों से आजाद हो गया-
ओफ़! इस रूप में मैं न तो जॉज पर हमला कर सकता हूं और न ही मिस किलर पर! अब क्या करूं मैं जॉज से पीछा छुड़ाने के लिए?
मिस किलर को सफलता सामने नजर आ रही थी-
आऽऽऽह! इस परग्रही का दिमाग अनलॉक हो रहा है! अभी भी यह कोमा में ही है लेकिन मैं इसके अचेतन मस्तिष्क में घुसने ही वाली हूं! बस जॉज, नागराज को थोड़ी देर तक और रोके रख सके तो बात बन जाए!
मौंटी भी मेंटल मैन को टक्कर तो दे रहा था लेकिन फिर भी था तो वह एक बच्चा ही-
आऽऽऽऽ! इसमें तो मानसिक शक्ति भी पापा जैसी ही है! फिर तो मेंटल मैन के मॉस्क के अंदर पापा ही हैं! अगर मैं इनकी शक्ल देख सकूं तो शायद मुझमें फिर से हिम्मत आ जाए! मेंटल मैन का मॉस्क फाड़ना होगा!
मौंटी के 'टेली काइनेसिसवार' से उछला वह नुकीला धातु का टुकड़ा मेंटल मैन मॉस्क को चीरता चला गया-
व्हाट!
ये... ये तो...

...पापा नहीं हैं! फिर इसके पास से पापा की मानसिक तरंगें कैसे आ रही हैं?
आऽऽऽह!
मॉस्क के अंदर अपने पापा ब्रेनगन का चेहरा न पाकर मौंटी की हिम्मत बढ़ने के बजाय खत्म हो गई थी-
और अब मैंटल मैन का एक ही वार, मौंटी को बेहोश करने के लिए पर्याप्त था-
अब नागराज के लिए मुसीबत बढ़ गई थी-
ओह! मेंटल मैन के मानसिक वार मुझको तीन सेकंडों के लिए भी इच्छाधारी रूप में रहने नहीं दे रहे हैं!
और मेरे सामान्य रूप में आते ही जॉज मुझे मार डालने के लिए बेताब है! पहले जॉज से ही निपटना पड़ेगा!
और इससे तभी निपटा जा सकता है, जब ये जबड़े उगलने के लिए अपना मुंह खोल ही न पाए! इसके जबड़ों को जाम करना पड़ेगा!
लेकिन यहां पर ऐसी कोई चीज नजर नहीं आ रही है जो इसके जबड़ों को जाम कर सके! पर हां, एक चीज ऐसी है! बस, अभी वह नजर नहीं आ रही है!

नागराज की कलाइयों से विशेष नागफनी सर्प बाहर झांक ने लगे-
और उसके खुले मुंह से ध्वंसक सर्पों की लहर निकल कर छत से जा टकराई-
तेरा निशाना तो बड़ा खराब है नागराज! मुझ पर ध्वंसक सर्प बेकार करने के बजाय छत को क्यों तोड़ रहा है?
वह इसलिए क्योंकि इस छत के ऊपर रेत का वह समंदर है...
...जो छत में छेद होते ही तेरे ऊपर आ गिरेगा! क्योंकि तू ठीक उस छेद के नीचे खड़ा है!
और जो रेत बड़े-बड़े पंचों तक को जाम कर देती है उसको तेरे जबड़ों में जाकर तेरे जबड़ों को जाम करने में समय नहीं लगेगा!
और नागराज के उस वार ने जॉज के पूरे शरीर को!
रेत के ढेर ने जॉज के जबड़ों को जड़ कर दिया-
ठड़ाक
इसको रोककर रखना अब तुम्हारा काम है मेंटल मैन! मेरा काम बस होने ही वाला है! इस परग्रही का दिमाग अनलॉक होकर कोमा से बाहर आ रहा है!
दूसरी तरफ देख रही मिस किलर यह नहीं देख पाई-

कि उस परग्रही की आंखें एक पल के लिए खुलकर फिर बंद हो गई थीं-
नागराज को इस लड़ाई का कोई अंत नजर नहीं आ रहा था-
ओफ़! एक को रास्ते से हटाओ तो दूसरा सामने आ जाता है! और हर दुश्मन की शक्तियाँ अलग होने के कारण मुझे लड़ाई का तरीका भी बदलना पड़ता है!
और इस दुश्मन के खिलाफ मेरी मदद करने के लिए मौंटी भी होश में नहीं है!
ओफ़! मौंटी का बदन एकाएक झटके खाने लगा है! मेंटल मैन के वार ने इसके दिमाग में जरूर कोई खराबी पैदा कर दी है!
ये एक नई मुसीबत है! ... अब मेंटलमैन को बेहोश करने का कोई तरीका जल्दी ही सोचना पड़ेगा!
और ये काम करेंगी धातु की ये छड़ें!
हा हा हा! तेरे हाथ का निशाना चूक सकता है नागराज! लेकिन मेंटल मैन के दिमाग का निशाना नहीं चूक सकता!

अब मैं तेरा दिमाग फाड़कर रख दूंगा!
आऽऽऽऽ ह!
नागराज के दिमाग की हर नस तड़कने लगी-
ओऽऽ ह! मैं ये लड़ाई ऐसे नहीं हार सकता!
नहीं हार सकता!
नहीं हार सकता!
उस किक ने मेंटल मैन के सिर को उन दो छड़ों के बीच में जा फंसाया-
जो पहले से ही स्विच बोर्ड के सॉकेट में धंसी हुई थी-
तेज करेंट के झटके ने मेंटल मैन के शरीर के साथ-साथ उसके दिमाग को भी झिंझोड़ डाला-
मेरा निशाना चूका नहीं था मेंटल! ये छड़ें मैंने स्विच बोर्ड की तरफ ही फेंकी थीं! तेरे दिमाग को झटका देने के लिए!
अब सिर्फ मैं और तुम बचे हैं मिस किलर!
मेरे... मेरे पास मत आना! वर्ना मेरा 'पर्सनेलिटी स्पलिट यंत्र' तुमको न जाने क्या बना डालेगा! गुस्सैल, पागल, क्रूर या फिर सनकी!

Amaan

RCJ

अरे! ये क्या? मेरे ही सांप वापस आकर मुझको काट रहे हैं!
हा हा हा! देखा मेरी 'पर्सनेलिटी स्पलिट गन' का कमाल नागराज! इसकी किरण ने तुम्हारे नागों के बुरे रूप को उभार दिया है! अब ये दुष्ट सर्प बन गए हैं!
तुझ पर भी मैं इस किरण का वार करके तुझको नायक से खलनायक नागराज बना दूंगी! तेरे अंदर भी एक बुरा रूप छुपा हुआ है! वह रूप जो कभी नागमणि और आतंकवादियों के इशारों का गुलाम था!
लेकिन चूंकि अभी ये मेरी गन किरण के कब्जे में है, इसलिए ये मुझे नहीं, बल्कि तुझको काट रहे हैं!
अब तेरा भी यही हाल करूंगी मैं!
लेकिन इस बार वह बुरा रूप मेरा गुलाम होगा!
मिस किलर का! ये आइडिया मुझे पहले क्यों नहीं आया?
ओह! इसकी किरण वाकई मेरा ऐसा हाल कर सकती है! अपने नागों का हाल मैं अपनी आंखों से देख चुका हूं! मुझे इसकी किरण से बचना होगा!
इच्छाधारी रूप में बदल-कर!
लेकिन ये... ये क्या हो रहा है! किरण मेरे अदृश्य शरीर के पार नहीं जा रही है!
बल्कि ये मेरे शरीर में हलचल पैदा कर रही है!
मेरे शरीर में खिंचाव सा महसूस हो रहा है!
ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं...

दो भागों में बंट रहा हूं!
ओ माई गॉड! ये... ये तो एक नागराज के दो नागराज बन गए! एक शांत और दूसरा गुस्सैल!
अब समझी मैं! नागराज के इच्छाधारी कणों में बदल जाने के कारण, मेरी किरण ने इसके बुरे रूप के कणों को अलग कर दिया है! और फिर दोनों रूपों ने एक साथ ठोस रूप धारण कर लिया है!
ये तो बस कमाल हो गया! अब नागराज को खलनायक नागराज के हाथों से मैं मरवाऊंगी!

अंधे के हाथ बटेर लग गई थी-
हा हा हा! बुरा रूप तो अच्छे रूप का जन्मजात दुश्मन होता है! मुझे तो इसको कंट्रोल करने की जरूरत भी नहीं है। ये खलनायक नागराज तो खुद ही नायक नागराज को खत्म करने के लिए बेताब हो रहा है!
?
बहुत सालों के बाद तुझ पर काबू पाने का मौका मिला है नायक! अब तक तूने मुझे एकदम दबाकर रखा था! एक भी इच्छा पूरी करने का मौका नहीं दिया था! आज मैं अपनी सबसे बड़ी इच्छा सबसे पहले पूरी करूंगा!
तुझको खत्म करने की इच्छा! आज के बाद खलनायक नागराज वह हर बुरा काम करने के लिए आजाद होगा जो वह करना चाहता है!
धड़ाक

आऽऽऽ ह! इसमें शक्ति तो मेरे बराबर की है! लेकिन इसके गुस्सैल स्वभाव ने इसके शरीर में बहती ऊर्जा को बढ़ा दिया है। इसीलिए ये मुझ पर हावी हुआ जा रहा है!
धड़
लेकिन गुस्सा इंसान की सोचने समझने की शक्ति को खत्म कर देता है! और इसकी यही कमजोरी मेरी ताकत बन सकती है! बस मुझे इसको एक बार इच्छाधारी कणों में बदलने के लिए मजबूर करना है। फिर मैं खुद इच्छाधारी कणों में बदलकर इसके कणों को अपने अंदर मिला लूंगा!
और एक बार फिर से बन जाऊंगा संपूर्ण नागराज!
खलनायक नागराजने वैसा ही किया, जैसी कि नागराज को उम्मीद थी-
वह भी दीवार पर चढ़ता हुआ छत तक जा पहुंचा था-
और उसमें इतनी मजबूती नहीं बची थी कि वह खलनायक नागराज का वजन संभाल सके-
लेकिन नागराज ने उसके लिए छत का वह हिस्सा छोड़ा था जो पहले से ही नागराज के वार से कमजोर हो चुका था-

अब खलनायक नागराज के सामने दो ही रास्ते थे! पहला, या तो इच्छाधारी कणों में बदलकर गिरने से बच जाना-
या दूसरा जमीन से टकराकर अपनी हड्डियां तुड़वा लेना-
पर नागराज को वह फायदा मिला, नहीं-
दोनों ही तरीकों से फायदा नागराज को ही पहुंचना था-
क्योंकि उसी पल उसके शरीर से मलबे के वे दोनों टुकड़े आ टकराए जो खलनायक नागराज के हाथों से चिपके हुए थे-
पलभर के लिए नागराज का सिर चकरा गया! और जब तक वह अपने आपको संभाल पाता-
तब तक खलनायक नागराज इच्छाधारी कणों में बदलकर-
फिर से सामान्य रूप धारण कर चुका था-

नागों से नाग गुंथ रहे थे-
ओह! मैं गलत समझ रहा था! क्रोध ने इसके सोचने-समझने की क्षमता को कम नहीं किया है! ये मेरी चाल को पहले ही भांप गया था! आखिर है तो ये मेरा ही रूप!
फुंकार से फुंकार टकरा रही थी-
ओफ़! मैं फुंकार छोड़ना नहीं चाहता था! लेकिन इसकी फुंकार का जवाब देने के लिए मुझको भी फुंकार छोड़नी ही पड़ रही है!
और मिस किलर की समस्या सुलझने के बजाय बढ़ती जा रही थी-
उठ जॉज, उठ! उफ़! ये तो हिल भी नहीं पा रहा है! और नागराजों की लड़ाई भी लंबी खिंचती जा रही है!... मुझे अपने लक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए! परग्रही को यहां से ले जाना ही पड़ेगा!
लेकिन ये बहुत भारी है! इसको कैप्सूल तक उठाकर ले जाना मेरे बस की बात नहीं है! अब मुझको खलनायक नागराज से ही मदद मिल सकती है!
मुझे लड़ाई खत्म होने का इंतजार करना पड़ेगा!

दोनों नागराजों की लड़ाई अब घातक स्तर पर उभर आई थी-
इसको अपने आसपास मौजूद लोगों का जरा सा भी ख्याल नहीं है। अब मुझे जरा सी भी दया न दिखाते हुए अपनी बुराई को जल्दी से जल्दी खत्म कर देना है!
बड़ाम
मेरा बुरा रूप मेरी हर शक्ति की नकल बना सकता है! लेकिन विशेष नागफनी सर्पों की नकल नहीं बना सकता क्योंकि वे मुझे देव कालजयी से वरदान में मिले हैं!
अब ध्वंसक सर्पों की मदद से या तो मैं खलनायक नागराज को नष्ट कर दूंगा, या फिर इसको इच्छाधारी कणों में बदलकर बचने के लिए मजबूर कर दूंगा!
लेकिन खलनायक नागराज भी नागराज ही था-
ओsss ह्! यह ध्वंसक सर्पों से बचने के लिए रेत की ढाल का प्रयोग कर रहा है! इंटेलीजेंट!
और साथ ही साथ रेत का तूफान उड़ाकर, नागफनी सर्पों का दम भी घोंट रहा है!

Amaan

नागराज पर घातक वारों की झड़ी लग गई-
ये नाइफ स्नेक छोड़ रहा है मुझ पर! इनका इस्तेमाल तो मैं भी कभी नहीं करता! क्योंकि इनका एक स्पर्श ही जीवों को टुकड़ों में बांट सकता है! मैं नागफनी सर्पों का प्रयोग करना ज्यादा पसंद करता हूं! पर अब इससे बचूं कैसे? ये तो वे सारे घातक हथियार मुझ पर आजमा रहा है जो मैंने अपने पास होते हुए भी कभी प्रयोग नहीं किए!
खट
खट
खट
नागराज के पास सोचने तक के लिए वक्त नहीं था-
ओफ़! हथौड़ा नाग! अब ये मुझको छिपने की जगह भी देना नहीं चाहता!
इच्छाधारी कणों में बदलने का खतरा अब मैं मोल नहीं लूंगा! खलनायक नागराज शक्तिशाली होता जा रहा है! अगर ये मुझ पर हावी हो गया तो गजब हो जाएगा!
लेकिन बाजी अभी पलटने वाली थी-
ओ, थैंक्स मौंटी!
पर तुम इस लड़ाई से दूर ही रहो!
मैं दूर ही रहूंगा नागराज! पर तुम अपनी शक्तियों का सही प्रयोग करो! उड़ो नागराज उड़ो!
उड़ो? पर मैं उड़ नहीं... सकता? अरे! मैं उड़ कैसे रहा हूं?
मौंटी के चेहरे पर मानसिक शक्ति का प्रयोग करने के तो कोई भी निशान नजर नहीं आ रहे हैं!

नागराज की इस नई शक्ति ने एकाएक लड़ाई का रुख पलट दिया था-
ये क्या हो रहा है? नागराज उड़ रहा है? पर कैसे? नागराज में उड़ने की शक्ति तो नहीं है!
कुछ गड़बड़ जरूर है! कोई बहुत बड़ी गड़बड़!
मुझको यह लड़ाई यहीं पर रुकवानी होगी!
मुझे क्या हो रहा है? मेरे अंदर अजीब- अजीब सी शक्तियां पैदा होती महसूस हो रही हैं। मैं जो चाह रहा हूं वह कर ले रहा हूं!
खलनायक नागराज का अंत सामने नजर आ रहा था-

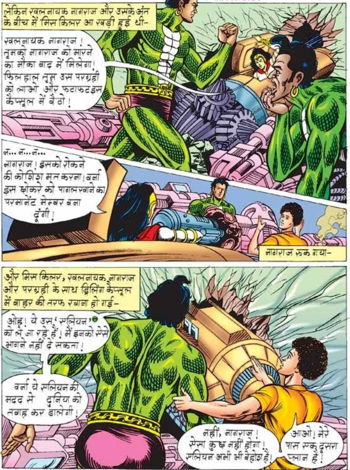
लेकिन खलनायक नागराज और उसके अंत के बीच में मिस किलर आ खड़ी हुई थी-
खलनायक नागराज ! तुमको नागराज को मारने का मौका बाद में मिलेगा ! फिलहाल तुम उस परग्रही को लाओ और फटाफट इस कैप्सूल में बैठो !
न... न... न...
नागराज ! इसको रोकने की कोशिश मत करना ! वर्ना इस छोकरे को पागलखाने का परमानेंट मेम्बर बना दूंगी !
नागराज रुक गया-
और मिस किलर, खलनायक नागराज और परग्रही के साथ ड्रिलिंग कैप्सूल में बाहर की तरफ रवाना हो गई-
ओह ! ये उस 'एलियन' को ले जा रहे हैं ! मैं इनको ऐसे भागने नहीं दे सकता !
वर्ना ये एलियन की मदद से दुनिया को तबाह कर डालेगी !
नहीं, नागराज ! ऐसा कुछ नहीं होगा ! एलियन अभी भी बेहोश है !
आओ ! मेरे पास एक दूसरा प्लान है !

Amaan

RCJ

मिस किलर को अपने अड्डे तक पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा था-
अपने दो आदमियों का घाटा उठाना पड़ा मुझे। लेकिन फिर भी मेरा अभियान सफल रहा! और यह तुम्हारी वजह से हो पाया, खलनायक नागराज!
लेकिन अब इसके दिमाग को अनलॉक कौन करेगा, मिस किलर?
अब मेरे साथ-साथ तुम भी इस दुनिया पर राज करोगे! और इसमें हमारी मदद करेगी इस परग्रही की दिमागी शक्ति और वैज्ञानिक ज्ञान!
वही जो इसका दिमाग पहले अनलॉक कर रहा था!
ब्रेनगन!
ओह! तो ब्रेनगन यहां पर कैद है। फिर इसका बेटा इसकी ब्रेन-वेव्स का पीछा करता हुआ उस गुप्त लैब तक कैसे आ पहुंचा था?
ये इस वक्त जिस मशीन के बीच में बंधा है वह मानसिक शक्तियों को एक इंसान से दूसरे इंसान तक और यहां तक कि किसी यंत्र तक भी पहुंचा सकता है। मेरा आदमी मेंटल मैन इसकी शक्तियों को ही काम में ला रहा था! इसीलिए इसके बेटे मोंटी को इसकी ब्रेन वेव्स पकड़ने का मौका मिल गया!
और तुमको इसका शुक्रगुजार होना चाहिए, खलनायक नागराज!
क्योंकि तुमको मेरे जिस यंत्र पर्सनेलिटी स्पलिट ने नागराज की कैद से आजाद किया है वह भी इसकी मानसिक शक्तियों से ही चल रहा था!

और अब ब्रेनगन की ही ताकत इसका दिमाग अनलॉक करेगी और मुझे विश्व साम्राज्ञी बनाएगी!
अनलॉकिंग शुरू हो रही है नागराज! दिल थामकर बैठो!
UNLOCK BEGINS
अनलॉकिंग प्रक्रिया शुरू हो गई-
PROCESS
हा हा हा! अब जल्दी ही इस परग्रही की सारी मानसिक शक्ति और सारा वैज्ञानिक ज्ञान मेरे पास होगा! जल्दी... जल्दी...
...जल्दी? अरे! ये क्या? इसके... इसके दिमाग में तो कुछ है ही नहीं! ये कैसे हो सकता है? क्या ये परग्रही एकदम बेवकूफ था! नहीं ऐसा होता तो इसको पृथ्वी को जीतने के अभियान पर लाया ही नहीं जाता! चक्कर कुछ और है! पर और क्या हो सकता है?
PROCESS COMPLETED
वह लड़का मौंटी!
ब्रेनगन का बेटा?
उससे इस बात का क्या संबंध हो सकता है?
याद करो मिस किलर! मुझसे लड़ते-लड़ते नागराज में एकाएक नई-नई शक्तियां आ गई थीं! और वे नई शक्तियां उसमें तब आई थीं, जब मौंटी ने उसका स्पर्श किया था!
हां! ये तो हुआ था! पर इसका मतलब क्या हुआ?
मौंटी में इतनी शक्तियां नहीं हो सकतीं कि वह किसी और को शक्तियां दे सकें!
मौंटी को वे शक्तियां कहीं और से मिली थीं! और वह शक्तियां उसे सिर्फ ये परग्रही ही दे सकता है!

समझी! यानी इस परग्रही ने अपनी शक्तियों को मौंटी के अंदर ट्रांसफर कर दिया है! अब इसका शरीर एक सांस लेते हुए खोल के अलावा और कुछ नहीं है! ...
... मौंटी! अब मुझे मौंटी चाहिए खलनायक नागराज! और उसको नागराज के पास से सिर्फ तुम ही ला सकते हो!
मैं कोशिश तो जरूर करूंगा! लेकिन उसने मेरे दुश्मन नायक नागराज को अद्‌भुत शक्तियां दे रखी हैं! पता नहीं मैं कामयाब हो पाऊंगा या नहीं!
तुमको कामयाब होना ही पड़ेगा! अगर नागराज के पास परग्रही की शक्तियां हैं तो मैं तुमको ब्रेनगन की मानसिक शक्तियां देकर भेजूंगी! और फिर तुम मौंटी के साथ नागराज की लाश भी लेकर लौटोगे!
मैं ब्रेनगन की मानसिक शक्तियों को तुम्हारे अंदर ट्रांसफर कर रही हूं!
नागराज, मौंटी का मकसद समझ नहीं पा रहा था-
ये तुम मुझको कहां पर ले आए हो मौंटी? ये तो स्क्रैप मैटल का यार्ड है! पुरानी कारों का कब्रिस्तान कहते हैं इसको!
क्या मिस किलर का वह अड्डा यहीं पर है जहां पर तुम्हारे पापा कैद हैं?
नहीं, नागराज! मिस किलर का वह अड्डा यहां पर नहीं है! यहां पर हम एक दूसरे जरूरी काम के लिए आए हैं!
और उस काम को जल्दी पुरा करने के लिए मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है! सुनो!

जल्दी ही नागराज की आंखों के सामने एक आकार उभरने लगा था-
ये तुम क्या बना रहे हो मौंटी? देखने में तो ये एक रेडियो टेलिस्कोप लगता है! जिससे अंतरिक्ष में रेडियो सिग्नल भेजे जाते हैं!
तुम सही समझ रहे हो नागराज! ये रेडियो टेलिस्कोप ही है! और ये सिग्नल भेजने के लिए तैयार है!
पर... हम तो मिस किलर और ब्रेनगन को ढूंढ रहे हैं!
अंतरिक्ष में रेडियो सिग्नल भेजकर हम भला उनको कैसे ढूंढ सकते हैं?
ये सिग्नल ब्रेनगन को बचाने के लिए नहीं, बल्कि पृथ्वी को बचाने के लिए है नागराज! ये सिग्नल मैं अपने साथियों को भेज रहा हूं!...
...ताकि वे आकर मुझको यहां से ले जाएं! मैं जब तक पृथ्वी पर रहूंगा तब तक मेरी शक्तियों का दुरुपयोग ही होगा!
तुम तो परग्रहियों जैसी बातें कर रहे हो मौंटी! इसका मतलब है कि तुम...
हां, नागराज! मैं वही परग्रही हूं जिसका शरीर मिस किलर के पास है! लेकिन मैंने अपनी मेमोरी मौंटी के दिमाग स्थानांतरित कर दी है!
मिस किलर के प्रयासों से मेरा दिमाग अनलॉक हो गया था और दिमाग के खुलते ही मैं पलभर में सारी स्थिति समझ गया था!
मैंने वहां पर मौजूद दिमागों को टटोला और इस लड़के के दिमाग में मुझे वह क्षमता नजर आई जो मेरी मानसिक शक्तियों को संभाल सके! बस ये पता चलते ही मैंने अपनी मेमोरी मौंटी के दिमाग में भर दी!
और वह दिमाग मुझे चाहिए, नागराज!...

... इस लड़के के शरीर के साथ!
खलनायक नागराज! तुमने हमको ढूंढ कैसे निकाला?
धड़ाक
मेरी और तुम्हारी मानसिक तरंगें एक ही हैं नागराज! तुमको ढूंढना भला क्या मुश्किल है! वैसे भी, अगर बेटा, बाप की मानसिक तरंगों को पकड़ सकता है तो बाप भी बेटे को इसी तरीके से ढूंढ सकता है!
ये उड़ भी रहा है नागराज! इसने तुम्हारी शक्तियों की बराबरी कर ली है! मुझे तुमको अपनी सारी बची-खुची शक्ति देनी पड़ेगी! तभी तुम इससे निपट पाओगे। पर ऐसा करके मैं यानी मौंटी शक्तिहीन हो जाऊंगा!... फिर मुझे सिर्फ तुम ही बचा पाओगे, नागराज!

Amaan
RCJ

तुमको कुछ नहीं होगा! मैं तुम्हारी रक्षा करने के लिए शीतनाग और सौडांगी को तुम्हारे साथ साए की तरह लगा दूंगा!
और फिर तू मुझको रोकेगा ताकि मैं इस लड़के तक पहुंच ही न पाऊं!
तेरा प्लान तो ठीक है! लेकिन इसमें एक खामी है! अगर तू सौडांगी और शीतनाग को मोंटी की रक्षा के लिए भेज सकता है...
...तो मैं सौडांगी और शीतनाग को मोंटी को पकड़ने के लिए भेज सकता हूं!
ओफ्फ! इसका तो मुझको ख्याल ही नहीं आया था कि इसके शरीर में सौडांगी और शीतनाग के खलनायक रूप भी मौजूद होंगे!
ये तो मैंने खुद ही मुसीबत मोल ले ली!
अब तो बस एक ही रास्ता है!

RCJ

कि मैं इस पर अपनी सारी शारीरिक शक्ति और मानसिक शक्ति जोड़कर ऐसा भीषण वार करूं जो इसको बेहोश कर सके और मैं इस बुरे रूप को अपने अंदर समेटकर नष्ट कर सकूं!
उस भीषण वार में हाथियों के झुंड तक को बेहोश कर सकने की ताकत थी-

इसीलिए खलनायक नागराज का होश संभाले रखना मुश्किल था-
ये थोड़ी देर तक ही इस हालत में रहेगा! लेकिन फिलहाल मुझको मौंटी को बचाना होगा! उसको बचाना ज्यादा जरूरी है!
मिस किलर को अपनी योजना पर पानी फिरता नजर आ रहा था-
मेरा खलनायक बेहोश हो रहा है! ऐसा नहीं हो सकता! वर्ना मेरा काम बीच में ही लटक जाएगा! मुझको ब्रेनगन द्वारा खलनायक नागराज को दी जा रही मानसिक ऊर्जा की मात्रा को बढ़ाना होगा! तभी खलनायक नागराज होश में आ पाएगा!
खलनायक नागराज के बेहोश होने से शीतनाग और सौडांगी के बुरे रूपों का पलड़ा हल्का होता जा रहा था-
शाबाश, शीतनागकुमार और सौडांगी! तुमको तो मेरी मदद की जरूरत ही नहीं है!
अब मैं खलनायक नागराज को काबू में करने का काम कर सकता हूं!

Amaan

नागराज मुड़ा तो था, खलनायक नागराज को खत्म करने के लिए-
लेकिन अब बारी उसके होश खत्म होने की थी। क्योंकि-
खलनायक नागराज इतनी जल्दी होश में कैसे आ गया? इसको तो कम से कम पांच मिनट तक और बेहोश रहना था।
मैं तो दो मिनटों में ही होश में आ गया, नागराज!...
...लेकिन तू अब अनंतकाल तक होश में नहीं आएगा! क्योंकि अब मैं तुझको मार डालूंगा! अच्छाई मरेगी और सिर्फ बुराई जिन्दा रहेगी!
एक के बाद एक कारों का ढेर नागराज के ऊपर गिरता चला गया-
और कुछ ही पलों बाद नागराज कबाड़ कारों के एक पहाड़ के नीचे दबा हुआ था-
ये वार सिर्फ तुझको बेहोश करेगा नागराज! तेरी जान निकालने का काम अभी बाकी है!

वह मैं करूंगा! तुझको इस ढेर के नीचे से निकालने के बाद!
आहा! ये रहा नागराज!
तू कराह रहा है!
आऽऽऽह!
यानी तू अभी तक पूरा बेहोश नहीं हुआ है! चल, अब मैं तुझको मौत की नींद सुला ही देता हूं!
एक के बाद एक जान-लेवा वार नागराज के शरीर पर बरसने लगे-
आ ऽऽऽह
और नागराज के शरीर में अमानवीय शक्ति होने के बावजूद उसका शरीर था तो एक इंसानी शरीर ही-
अब तू कराह भी नहीं पा रहा है! शायद तेरी आत्मा तेरा साथ छोड़ चुकी है!
किसी भी इंसानी शरीर के लिए क्रोध के लावे से भरे उन वारों को सह पाना असंभव था-
कड़ाक

इसकी धड़कन लगभग बंद हो चुकी है! मौत के द्वार पर खड़ा है मेरा अच्छा रूप! मेरे लिए इसकी शक्तियां हासिल करने का ये अच्छा मौका है!
मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर इसके मृत होते शरीर में घुस जाऊंगा और इसके मरने से पहले इसके शरीर को भी इच्छाधारी कणों में बदलकर अपना पूर्ण रूप हासिल कर लूंगा! और उस रूप में अच्छाई, बुराई पर नहीं बल्कि बुराई राज करेगी अच्छाई के ऊपर!
वह पूर्ण रूप होगा...
खलनायक नागराज का!
अरे! इस रूप में मुझ पर वार कौन कर सकता है!
मैं कर सकता हूं! मैं सिर्फ तुम्हारे इच्छाधारी कणों में ही बदलने का इंतजार कर रहा था! मुझे पता था कि तुम मेरे 'मरते' ही पूर्ण रूप पाने के लिए यही रास्ता अपनाओगे!
नागराज!

Amaan

RCJ

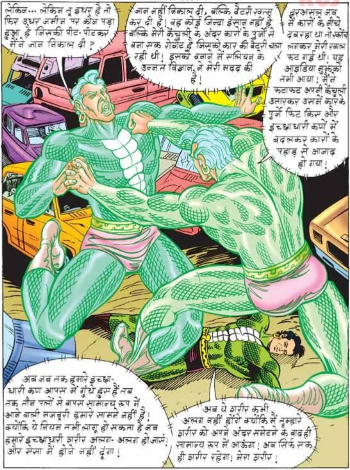
लेकिन... लेकिन तू इधर है तो फिर उधर जमीन पर कौन पड़ा हुआ है जिसकी पीट-पीटकर मैंने जान निकाल दी ?
जान नहीं निकाल दी, बल्कि बैटरी खत्म कर दी है! वह कोई जिन्दा इंसान नहीं है बल्कि मेरी केंचुली के अंदर कारों के पुर्जों से बना एक रोबोट है जिसको कार की बैटरी चला रही थी! इसको बनाने में एलियन के उन्नत विज्ञान ने मेरी मदद की है!
दरअसल जब मैं कारों के नीचे दब रहा था तो खरोंच लगकर मेरी खाल फट गई थी। यह आइडिया मुझको तभी आया! मैंने फटाफट अपनी केंचुली उतारकर उसमें कार के पुर्जे फिट किए और इच्छाधारी कणों में बदलकर कारों के पहाड़ से आजाद हो गया!
अब जब तक हमारे इच्छाधारी कण आपस में गुंथे हुए हैं तब तक तीन पलों से वापस सामान्य रूप में आने वाली मजबूरी हमारे सामने नहीं है! क्योंकि ये नियम तभी लागू हो सकता है जब हमारे इच्छाधारी शरीर अलग-अलग हो जाएं! और ऐसा मैं होने नहीं दूंगा!
अब ये शरीर कभी अलग नहीं होंगे क्योंकि मैं तुम्हारे शरीर को अपने अंदर समेटने के बाद ही सामान्य रूप में आऊंगा! अब सिर्फ एक ही शरीर रहेगा! मेरा शरीर!

मैंने गलत नहीं कहा था कि क्रोध सोचने समझने की शक्ति को गुम कर देता है। अगर ऐसा नहीं होता तो तुमको ये समझने में समय नहीं लगता कि जिससे तुम लड़ रहे हो वह जिन्दा इंसान नहीं बल्कि एक रोबॉट है!
इच्छाधारी रूप में नायक नागराज खलनायक नागराज पर भारी पड़ रहा था-
अब खलनायक नागराज का अस्तित्व मिटने में ज्यादा वक्त नहीं था-
सौडांगी और शीतनागकुमार भी अपने-अपने बुरे रूप पर विजय पा चुके थे-
दोनों के ही बुरे रूप हारकर उनके शरीर में वापस जाने के लिए बाध्य हो गए थे-
लड़ाई खत्म होने वाली ही थी कि तभी-
अरे! मेरे दिमाग में खलनायक नागराज के दिमाग के जरिए मिस किलर का संदेश आ रहा है!
रुक जाओ नागराज! याद रखो! एलियन की मेमोरी चाहे मोटी के मस्तिष्क में है, लेकिन उसका शरीर अभी मेरे पास है!
अपने आपको खलनायक नागराज के हवाले कर दो, वर्ना एलियन के शरीर की बोटी-बोटी कर दूंगी मैं!
फिर वही एलियन हमेशा के लिए अपने शरीर को ढूंढता फिरेगा जिसको बचाने के लिए तुम इतने बेताब हो!

Amaan

RCJ

नागराज के मस्तिष्क से जुड़े मौंटी तक भी यह संदेश पहुंच गया था! और उसके साथ-साथ मौंटी की मेमोरी में मौजूद परग्रही तक भी-
नहीं, नागराज! ऐसा मत होने देना! बिना शरीर के तो मेरा अस्तित्त्व हमेशा के लिए अधूरा रह जाएगा! फिर मैं न घर का रहूंगा और न घाट का!
ओफ़! ये कैसी दुविधा मेरे सामने आ गई है!
मैंने कभी किसी इंसान को नुकसान न पहुंचनेदेने की शपथ ली है! फिर मैं भला उस एलियन को नुकसान कैसे पहुंचनेदे सकता हूं जो एक पूरे सुदूर ग्रह का प्रतिनिधि है इस पृथ्वी पर!
ठीक है मिस किलर! लो, मैंने छोड़ दिया तुम्हारे खलनायक नागराज को! अब तुम भी एलियन के शरीर को आजाद कर दो!
कर दूंगी! बल्कि तुम्हारे ही हाथों में सौंप दूंगी। एक काम करो! तुम खलनायक नागराज के साथ-साथ मेरे अड्डे तक आ जाओ। मौंटी को भी साथ लेते आओ! और ब्रेनगन को भी ले आओ और एलियन के शरीर को भी।
पर हां! मैं जरा शक्की दिमाग की हूं! इसलिए तुमको एक छोटी सी तकलीफ करनी होगी!
तुमको खलनायक का कैदी बनकर आना होगा!
ठीक है मिस किलर! एलियन जैसे प्राणी को बचाने के लिए मुझे तुम्हारा ये ब्लैक मेल भी मंजूर है!

और जल्दी ही-
आओ, नागराज आओ! मुझे तो अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा है। नागराज मेरे अड्डे पर! और वह भी बंदी के रूप में! चचच!
तेरा बुरा रूप यानी तेरी बुराई तो तुझको हरा नहीं पाई, लेकिन तेरी अच्छाई तेरी मौत जरूर बनेगी नागराज!
स्लियन के प्रति परोपकार ही तुझे मौत के घाट उतारेगा!
मैं जानता था कि तुम्हारे जैसे अपराधी कभी वादा पूरा नहीं करते! तुमने तो स्लियन को मेरे हाथों में सौंपने का वादा किया था!
किया था! पर ये नहीं कहा था कि तेरे वे हाथ जिन्दा होंगे या मुर्दा!
पर चलो! मैं एक सौदा कर लेती हूं। तुमने स्लियन के लिए जान दांव पर लगाई है तो स्लियन का भी तो तुम्हारे प्रति कुछ फर्ज बनता है!
मौटी के दिमाग में स्लियन की मेमोरी को मेरे सिर पर चढ़े इस यंत्र की मेमोरी में भरवा दो तो शायद मैं तुमको जिन्दा छोड़ दूं!

Amaan

अगर नागराज मेरे लिए कुर्बानी दे सकता है तो मैं भी अपनी प्रजाति का सर शर्म से झुकने नहीं दूंगा! अगर तुमको नागराज की जान के बदले मेरा ज्ञान चाहिए तो मैं तैयार हूं। लो मेरी मानसिक शक्ति और मेरा ज्ञान!
उम्मफ! उम्मफ!
सॉरी, गुड ब्वॉय! तुमको चुप रखने के लिए और तुम्हारी फुंकार रोकने के लिए तुम्हारे मुंह पर ये टेप लगाना जरूरी है!
तेरी कलाइयों पर टेप पहले से ही लिपटा हुआ है! अब न तो तू सांप निकाल सकता है और न ही फुंकार छोड़ सकता है। अब तू एकदम बेबस है। इसलिए तड़पना छोड़, और मरने से पहले देख ले कि हम दुनिया पर राज कैसे करेंगे!
मिस किलर ने अपनी मंजिल को पा लिया था-
अब उसके पास सुदूर ग्रह का वह वैज्ञानिक ज्ञान था जो पृथ्वी जैसे मामूली ग्रह तो क्या, सूर्यों को भी अपने इशारे पर नचाने की क्षमता रखता था-
हा हा हा! मिल गया मुझे वह ज्ञान जिसकी मुझे तलाश थी। मेरी पूजा पूरी हुई। और पूजा का समापन बलि से होगा।
खलनायक नागराज! चढ़ा दो नागराज की बलि। पर मारने से पहले इसका जहर चूस लो! उसको बेकार मत करो।

हा हा हा! इसी मौके का तो मैं इंतजार कर रहा था! अब पहले मैं इसको इसका जहर चूसकर शक्तिहीन करूंगा, और फिर इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा!
नागराज अपने आपको बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था-
उम्मममफ़! उन्नमफ़!
लेकिन कोई और उसको बचाने की कोशिशें जारी रखे हुए था-
परग्रही मौंटी के दिमाग में अभी भी डेरा डाले हुए था-
ज्ञान के धन का सबसे बड़ा फायदा यही है कि वह बांटने से कम नहीं होता! मैंने मिस किलर के दिमाग में सिर्फ अपनी मानसिक शक्ति और ज्ञान ट्रांसफर किया है, अपनी मेमोरी और पर्सनेलिटी नहीं! मेरा ज्ञान मिस किलर के साथ-साथ मेरे पास भी है! अब मैं चुपचाप अपने शरीर में प्रवेश करके नागराज को बचाऊंगा!
मिस किलर की तरह नागराज को मैं धोखा नहीं दूंगा!
कुछ ही पलों बाद-
आऽऽऽह! मिस किलर, एलियन उठ खड़ा हुआ है!
उठ गया है तो फिर से लिटा दूंगी मैं इसको! अब इसको रोकने के लिए मेरे पास इसका ही वैज्ञानिक ज्ञान है, और मानसिक शक्ति भी!
तुम आराम से नागराज को मारने का काम जारी रखे रहो!

तुझको टुकड़ों में काटने का इरादा तो मैंने पहले ही कर लिया था, स्लियन! और मिस किलर अपने आपसे किया गया वादा जरूर पूरा करती है!
पर तू ऐसा करेगी कैसे, मिस किलर?
जो वैज्ञानिक ज्ञान तेरे पास है स्लियन, अब वही ज्ञान मेरे पास भी है। और जैसे उस ज्ञान का प्रयोग करके तू इस जगह पर मौजूद पुर्जों से घातक यंत्र बना रहा है वैसा मैं भी बना सकती हूं। और भूल मत कि अब मेरे पास मानसिक शक्ति भी है!
ले, चख अपने ही वैज्ञानिक ज्ञान का स्वाद!
मिस किलर ने स्लियन को नागराज की मदद करने से रोक दिया था-
और नागराज की जान तिल-तिल करके निकलती जा रही थी-
आऽऽऽह! अब मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है! अब मेरी मदद कोई कर सकता है तो सिर्फ ब्रेनगन! लेकिन मैं उससे मदद मांगू कैसे? एक तो वह बेहोश है और दूसरे मेरे मुंह पर टेप चिपका हुआ है!
मौंटी! यस! मौंटी में भी थोड़ी बहुत मानसिक शक्ति है! मैं उसके जरिए ब्रेनगन से मानसिक संपर्क बना सकता हूं! मौंटी! मौंटी!

जल्दी ही नागराज, मौंटी के माध्यम से ब्रेनगन के मस्तिष्क से संपर्क बना रहा था-
ब्रेनगन! तुम्हारी ही मानसिक शक्ति ने खलनायक नागराज को बनाया है! अब तुम ही इसको खत्म कर सकते हो! इस पर अपनी मानसिक शक्तियों का वार करो ब्रेनगन! वार करो!
ओफ्! कोई फायदा नहीं! ब्रेनगन का दिमाग कोई जवाब नहीं दे रहा है!
इसको जगाने के लिए एक तेज भावनात्मक झटके की जरूरत है! पर वह झटका क्या हो सकता है?
बस! तेरा वक्त खत्म हुआ नागराज! क्योंकि तेरा जहर खत्म हो चुका है! अब टुकड़ों में बंटने के लिए तैयार हो जा!
और वादे को पूरा करो!
कि तभी-
अरे! ये क्या हो रहा है? लैब के धारदार पुर्जे उड़कर मुझ पर वार क्यों कर रहे हैं? मेरा शरीर कट सकता है!
ओह हां! याद आया! ब्रेनगन ने मुझसे वादा किया था कि वह अपनी जान बचाने का कर्ज उतारेगा! ब्रेनगन! कर्ज उतारने का वक्त आ गया है। अपना वादा याद करो! वादा याद करो!
कुल्हाड़ा सर्प की धार नागराज को काटने वाली ही थी-
ब्रेनगन का दिमाग जाग गया है। वह मेरी मदद कर रहा है!
सच्चे इंसान अपना वादा कभी नहीं भूलते!

Amaan

RCJ

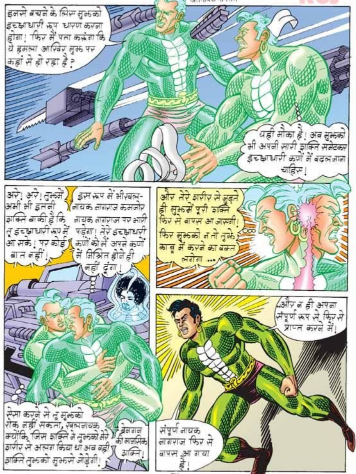
इनसे बचने के लिए मुझको इच्छाधारी रूप धारण करना होगा! फिर मैं पता करूंगा कि ये हमला आखिर मुझ पर कहां से हो रहा है?
यही मौका है! अब मुझको भी अपनी सारी शक्ति समेटकर इच्छाधारी कणों में बदल जाना चाहिए!
अरे! अरे! तुझमें अभी भी इतनी शक्ति बाकी है कि तू इच्छाधारी रूप में आ सके! पर कोई बात नहीं!
इस रूप में भी खलनायक नागराज कमजोर नायक नागराज पर भारी पड़ेगा! तेरे इच्छाधारी कणों को मैं अपने कणों में मिश्रित होने ही नहीं दूंगा!
और तेरे शरीर से जुड़ते ही मुझमें पूरी शक्ति फिर से वापस आ जाएगी! फिर मुझको न तो तुझे काबू में करने का वक्त लगेगा...
और न ही अपना संपूर्ण रूप से फिर से प्राप्त करने में!
ऐसा करने से तू मुझको रोक नहीं सकता, खलनायक क्योंकि जिस शक्ति ने तुझको मेरे शरीर से अलग किया था अब वही शक्ति तुझको मुझसे जोड़ेगी!
ब्रेनगन की मानसिक शक्ति!
संपूर्ण नायक नागराज फिर से वापस आ गया है!

और अब तुम्हारी खैर इसी में है कि तुम आत्मसमर्पण कर दो मिस किलर!
अब तू घुटने टेककर मेरे सामने गिड़गिड़ा नागराज! क्योंकि अब तू मेरे सामने एक भुनगे से ज्यादा कुछ नहीं है!
इसका हेलमेट! एलियन का वैज्ञानिक ज्ञान इसी के सर्किटों में भरा है! अगर मैं इसको इसके सिर से गिरा दूं तो शायद इसकी नई शक्तियां भी चली जाएं!
लेकिन-
कोई फायदा नहीं है नागराज! अब तक सारा ज्ञान मेरे दिमाग में समा चुका है! अब मुझे इस हेलमेट की जरूरत नहीं है!
अब मैं अजेय हूं! अरे!
सारे यंत्र काम करना बंद क्यों कर रहे हैं? और... और... दीवारों के बीच से अंदर क्या आ रहा है?
मुझे वापस लेने के लिए यान आ चुका है! मिस किलर! उसी की मैग्नेटिक फील्ड तुम्हारे यंत्रों को खराब कर रही है! और ये मेरे साथी हैं जो मुझे लेने आए हैं! इनकी संयुक्त शक्ति के सामने तुम टिक नहीं सकती!
ओफ! सही कहा तूने! पर अगर ये शक्ति मुझे नहीं मिलेगी तो किसी को भी नहीं मिलेगी!
वापस चले जाओ! वर्ना ये वायब्रा बम तुम सबके साथ-साथ तुम्हारे यान के भी चिथड़े उड़ा देगा!
तब तुम भी मर जाओगी!
पर तुम सबको साथ लेकर मरूंगी! फैसला जल्दी कर लो! बम फटने में सिर्फ तीस सेकंड बचे हैं!

ओऽऽऽफ! अगर ये बम फट गया तो इसके वायब्रेशन पांच सौ वर्ग किलोमीटर के इलाके को सपाट कर देंगे!
क्या तुम्हारा वैज्ञानिक ज्ञान भी इसको बंद नहीं कर सकता, एलियन?
ये वायब्रा बम हमारी वैज्ञानिक तकनीक से ही बना है नागराज! और इसमें एक एक ऐसा कोड होता है, जिसको जानने वाला ही इस बम को डिफ्यूज कर सकता है!
वह कोड सिर्फ मिस किलर को मालूम है और ये इस बम को कभी डिफ्यूज नहीं करेगी!
पर मिस किलर का यह अड्डा आबादी के बीच में है! हमारे साथ कई निर्दोष भी मारे जाएंगे!
क्या कोई तरीका नहीं है इस बम को फटने से रोकने का? है एक तरीका है!
ब्रेनगन, मुझको फिर एक बार तुम्हारी मदद चाहिए!
तुम्हारी मानसिक ऊर्जा चाहिए मुझे...
...इस 'पर्सनेलिटि स्पलिट यंत्र' को चलाने के लिए! अगर यह मेरे अंदर का बुरा रूप उभार सकता है तो मिस किलर में छुपा अच्छा रूप भी उभार सकता है! मैंने इसकी सेटिंग अच्छे रूप पर फिक्स कर दी है!
यंत्र का असर तुरंत सामने आ गया–
अरे! ये... ये मैं क्या करने जा रही थी? लाखों जिन्दगियों को खत्म कर रही थी मैं! मैं अभी इस बम को बंद कर देती हूं! धन्यवाद नागराज! तुमने मुझे एक बड़े पाप से बचा लिया! (सुबुक)
अब मुझे अपने पापों की सजा पाने के लिए कानून के पास ले चलो नागराज!
व्हियू! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं शैतान के मुंह से राम-राम सुनूंगा! अब खतरा टल चुका है! धरती अब सुरक्षित है!

परग्रही तो गए नागराज, पर मिस किलर के पास अपना ज्ञान छोड़ गए हैं! कहीं मिस किलर फिर से उस ज्ञान का दुरुपयोग न कर ले!
सुबुक!
ऐसा नहीं होगा ब्रेनगन! मैंने 'सम्मोहन आदेश' के द्वारा मिस किलर को वह सारा ज्ञान भूल जाने का आदेश दिया है!
अब ये उस ज्ञान का कभी प्रयोग नहीं कर पाएगी!

समाप्त.